वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

दिसम्बर – 2023

देवात्मा – अंक

- *परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आदर्श देव जीवन*
- *भौतिक जगत के सम्बन्ध में*
- *उद्‌भिद जगत के सम्बन्ध में*
- *पशु जगत के सम्बन्ध में*
- *मनुष्य जगत के सम्बन्ध में*
- *शुभ संग्राम*
- *महोत्सव का प्रोग्राम*

तुमको बार-बार प्रणाम

सत्य-शिव-सुन्दर महा व्रतधारी, तुमको बार-बार प्रणाम,
कैसे करूं हे जीवन दाता, तुमरी महिमा का मैं गान ?
आत्म-तिमिर में भटक रहे थे, सदियों से बेसुध इन्सान,
देव-दिवाकर प्रगट हो तुमने, दूर किया सारा अज्ञान।
अपनी खुशियां वार दीं सारी, पर उनका उद्धार किया,
मिथ्या विश्वासों ने जिन पर, था अपना अधिकार किया।
तुच्छ से तुच्छ जीव भी जो कुछ, पाते सुविधा से आराम,
छोड़ा हाय ! आपने वह भी, कर दीना सब कुछ कुर्बान ।
रातों जागे, सेहत खोई, भेंट किया अपना धन मान;
हे महा दानी ! मानव जग को, दीना देव-धर्म का दान।
खोजे सत्य निराले तुमने, घोर तपस्या कर दिन रात;
तिमिर-निशा को दूर किया है, आत्म जग में हुआ प्रभात।
ऋषि-मुनि वन में बेचारे, कड़ी साधना करते थे;
राज पाठ को तजकर के भी, ज्योति से ना भरते थे।
आपकी ही करुणा से अब हैं, तिमिर-ग्रस्त उर ज्योर्तिमान;
हुआ उजाला उनके भीतर, देव ज्योति से है भगवान।
चुका सकेगा कैसे ऋण को, तुमरे यह मानव संसार ?
युग-युग गाए जाएंगे जग में, तुमरे ये अद्‌भुत उपकार।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154
+91 98769-59659

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

धर्म जीवन

खण्ड 34 अंक 12
दिसम्बर - 2023
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आदर्श देव जीवन

हम लोग जो परम पूजनीय भगवान की शरण में आने का सौभाग्य प्राप्त कर चुके हैं, हमारा विश्वास नेचर के विकास क्रम में भी अवश्य है। नेचर के विकास क्रम में जो नाना जगतों का विकास हुआ है, वह हम वह कुछ न कुछ अवश्य समझते हैं। इसी विकास क्रम में सात्विक जीवन धारी आत्माओं का जन्म हुआ है, जिन्होंने एक - एक पक्ष में इस संसार में सुधार का काम किया है। यह बहुत साधारण बात है, जिसे सब लोग समझ सकते हैं। इन सब सात्विक जीवनधारी आत्माओं में जो 2 भाव, जिस जिस विषय में बलशाली थे, उन्होंने उनसे उस पक्ष में बहुत विस्मित करने वाले काम करवाएँ हैं।

किसी ने मोटे मिथ्या विश्वासों, मिथ्या पूजा को देखा, श्री गुरू नानक देव जी ने भी कई प्रकार की मिथ्याओं का खण्डन किया है। किसी ने सती प्रथा, किसी ने विधवा विवाह की बुराईयों को दूर करने का बहुत विरोधताओं के बावजूद भी भरसक प्रयत्न किया और सफल भी हुए। किसी ने अपनी धन सम्पत्ति का त्याग करके शिक्षा संस्थाएं खोली। कई वैज्ञानिकों ने अपने अपने क्षेत्र में रात दिन संग्राम करके विज्ञान मूलक खोजें भी कीं, इनका क्षेत्र बहुत विस्तृत है। यह सारे सेवा के क्षेत्र व विज्ञान मूलक खोजें अपने एक - 2 क्षेत्र में थी।

इसी विकास क्रम में एक ऐसी अलौकिक हस्ती का उदय हुआ कि जिसमें सारे सात्विक भावों वा विज्ञान मूलक सोच का समन्वय हो गया, इससे भी आगे उनमें सत्य और शुभ का पूर्ण अनुराग अर्थात नेचर के चारों जगतों में सच्चाई और भलाई लाने की अद्‌भुत शक्तियां, बुराई और पाप के लिए पूर्ण घृणा अर्थात चारों जगतों से पाप और बुराई मिटाने के लिए अद्‌भुत देव शक्तियां पैदा हुईं।

इन्हीं देव शक्तियों ने उन्हें चारों जगतों की भलाई के लिए अनोखा जीवन ब्रत ग्रहण करने के लिए मजबूर कर दिया। 32 वर्ष की भरी जवानी में धन दौलत कमाने की बहुत श्रेष्ठ योग्यता रखकर और परिवार रखकर भी उन्होंने अनोखा और सर्वश्रेष्ठ जीवन व्रत ग्रहण किया : -

''सत्य, शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग में उपकार में ही जीवन यह जावे ''

उन्होंने मानवता की भलाई व उनकी पाप वा मिथ्या से रक्षा के लिए ब्रत ग्रहण क्या किया कि उसी मानव जगत की ओर से विरोधता के तुफान खड़े हो गए। जिनकी भलाई के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने का ब्रत

लिया, वही जानी दुश्मन बन गए। परन्तु प्रतिकूल से प्रतिकूल हालातों में भी परम पूजनीय भगवान ने एक कदम भी पीछे नहीं हटाया, बल्कि सन्तापों में से गुज़रते हुए, मुकदमों में पिसते हुए, धर्म में विज्ञान का समावेश करके बिल्कुल निराले, विज्ञान मूलक धर्म की स्थापना की, सैकड़ों और हज़ारों जनों को पाप वा मिथ्या से निकाला और उन्हें उच्च जीवन का दान दिया। एक ओर उनका यह अद्वितीय संग्राम है और दूसरी ओर न केवल मनुष्य मात्र बल्कि चारों जगतों के सम्बन्ध में उनकी अनोखी दिनचर्या थी।

जितने गुरू, पीर पैगम्बर हुए हैं, उनमें से किसी की भी दिनचर्या वा उन के अपने जीवन में सब जगतों की भलाई के उदाहरण नहीं मिलते, परन्तु परम पूजनीय भगवान का जीवन धर्म अर्थात आत्मा की उच्चतम शिक्षा के साथ-साथ उनका स्वयं का जीवन बचपन से लेकर इस संसार का सफर समाप्त होने तक आसाधारण घटनाओं से भरा हुआ है। इस विशेष अंक में हम उनके जीवन की कुछ वह कथाएं दे रहे हैं जो समय-समय पर उनके जीवन में घटित हुई और जो हर स्तर पर उनके अद्वितीयपन को दर्शाती हैं।

परम पूजनीय भगवान ने चारों जगतों अर्थात भौतिक वा बेजान जगत, वनस्पति जगत, पशु जगत और मनुष्य जगत के सम्बन्ध में न केवल आदेश दिए हैं बल्कि उनको अपने जीवन में जीया है। आम सन्त महात्माओं का जीवन उपदेश देने, कीर्तन आदि करने व करवाने, धर्म को प्राप्त करने के लिए पूजा, पाठ, मन्त्र आदि बताने, लोगों से भेंटे लेने और औरों से तरह तरह की सेवाएं प्राप्त करने तक ही सीमित होता है। इससे आगे कल्पित ईश्वर वा देवी देवताओं की महिमा गाने और इन्हें ही धर्म का मार्ग बताने में वह सन्तुष्ट होते हैं और श्रोतागण भी इसे ही धार्मिक बनना समझते हैं।

परन्तु परम पूजनीय भगवान देवात्मा चारों जगतों के शुभ और हित अनुरागी होकर चारों जगतों में श्रेष्ठत्म व्यवहारों को ही धर्म का आरम्भ न केवल समझते हैं, परन्तु चारों जगतों की सेवा की उनके स्वयं के जीवन की घटनाएं हमें भी उन जगतों की सेवा करने के लिए प्रेरित करती हैं। चारों जगतों के प्रति हमारे व्यवहार हमारा धर्मवान बनने या न बनने का तराजु हैं।

भौतिक जगत के प्रति उनका व्यवहार उतना ही उच्चतम था, जितना और जगतों के सम्बन्ध में। परम पूजनीय भगवान की बेजान वस्तुएं जिस सुन्दरता से रखी और व्यवहार में लाई जाती थी, यह उनके आदर्श रूप को ज़ाहिर करती थी। जिस स्थान पर उनका निवास होता था, उसकी साफ सफाई, तरतीब देखने के योग्य होती थी। अपने इर्द गिर्द मैल को वह सहन ही नहीं कर सकते थे। बेमतलब का सामान इकट्ठा करना उन्हें नहीं भाता था। वह अपने घर से फालतू सामान खुद निकालते या निकलवा देते थे।

भौतिक जगत की हानि भी उन्हें बहुत चोट पहुँचाती थी और उसे दूर करने के लिए मजबूर हो जाते थे। जैसे भगवान सैर को जा रहे हैं, उन्हें एक नल खुला मिलता है, जो किसी ने पानी पीकर चलता हुआ छोड़ दिया था। परम पूजनीय भगवान उसे खुला देखकर झट वहां रुक जाते हैं और उस नल को बन्द कर देते हैं। उनकी आस्तीन भीग जाती है, परन्तु उन्हें किसी प्रकार की हानि गवारा नहीं। मार्ग में चलते हुए कोई सड़क पर हानिकारक वस्तु, रोड़े, पत्थर या

केले आदि के छिलके दिखाई दें, तो फौरन उन्हें परे हटा देते थे और यही शिक्षा उन्होंने अपने अनुयाईयों को दी है। हम तुच्छ आत्माओं को भी कुछ ऐसी छोटी - छोटी हानियों को देखकर रुकने की प्रेरणा मिली है। भौतिक जगत के उपकारों को सामने लाकर ही ऐसे भजनों को गाया जाता है, जिसमें भौतिक जगत के उपकारी रूप को दिखाया गया है : -

भौतिक जगत है अति महान, उस पर निर्भर हमरे प्राण,
सूरज चन्द्र और सितारे, इसी जगत के है अरकान।
जलवायु और अग्नि मिट्टी, देता है यह जगत महान।
लोहा, चांदी, सोना, हीरे, इसी जगत का है यह दान।
उद्भिद, पशु, मनुष्य जगतों का, यही जगत है आश्रय अस्थान
अधिक से अधिक अभिलाषी होकर, लाभ करें हम इसका ज्ञान
पालें कर्त्तव्य, वर्जित आज्ञा, देते हैं जो गुरू भगवान
सीखें सद व्यवहार हम उसका, लाभ करें आत्म कल्याण।

- सुरजीत बराड़

भौतिक जगत के सम्बन्ध में

सफाई का बोध

19 दिसम्बर : भगवान सक्खर आश्रम में पधारे हुए थे। सुबह और शाम सैर के लिए सिंध दरिया पर तशरीफ ले गए। 9 - 10 सेवक भगवान के दर्शन करने के लिए आ गए। सैर से वापिस आने पर भगवान उनसे मिले। भगवान ने फरमाया कि आश्रम अंदर से तो साफ है लेकिन इसके बाहर की जगह को देखकर बहुत तकलीफ होती है। आश्रम के बाहर सफाई की सख्त ज़रूरत है। इसी सिलसिले में 21 दिसम्बर को भगवान ने मुझ तुच्छ (श्रीमान ईश्वर सिंह जी) और श्रीमान संत राम जी को फरमाया कि आश्रम को जहां हम ठहरे हुए हैं, कुछ बेहतर करके जाना है।

भगवान जिस स्थान में वास करते हैं, उसके भाग्य खुल जाते हैं। इसलिए इस बारे में भगवान देवात्मा के सम्बंध में 5 जनवरी 1914 के समाचार में दर्ज है : -

भगवान जिस स्थान में कुछ दिन भी वास करते हैं उसे न केवल अपने महा सूक्ष्म देव भावों के असरों से उच्च बना देते हैं बल्कि अवसर पाकर उसके बाहर के आकार को भी बदल कर पहले से श्रेष्ठ बना देते हैं। यहां के (सक्खर के) साधन आश्रम में उन्होंने नाना प्रकार का उच्च परिवर्तन कर दिया है। भगवान के यहां पहुंचने पर आश्रम अन्दर से तो कुछ अच्छी अवस्था में था, परन्तु बाहर से इसकी बहुत बुरी और घिनौनी हालत थी। उन्होंने उसकी बाहर की दीवारों पर सफेदी और रंग और उसके इर्द - गिर्द की जगह को साफ और ठीक कराया है। थड़ों आदि पर लेपन कराया। सैकड़ों रोड़े और पत्थर आदि सब चुनवा कर उसके अलग - अलग ढेर लगवा दिए हैं। और मंदिर में अन्य कई प्रकार के आवश्यक परिवर्तन वा संशोधन के लिए उन्होंने आज्ञाएं दी हैं। साधन आश्रम पर खड़ा करने के लिए एक खूबसूरत एकता पताका बनवाया है। साधन मन्दिर में जिन जिन वस्तुओं का होना आवश्यक है, वह बनवाई और खरीदी गई हैं। आश्रम की मानो काया ही पलट गई है। धन्य हैं और बार - बार धन्य हैं भगवान देवात्मा, कि जिनका जिस मकान में वास होता है, वह मकान बेहतर हो जाता है और जिस दिल में वास होता है, वह दिल शुद्ध, उच्च और हितकर बन जाता है।

भगवान देवात्मा फरमाते हैं : - देव

जीवन को प्राप्त होकर मैं विश्व के प्रत्येक विभाग के साथ अपना जीवन्त संबंध अनुभव करता हूं। मैं विश्व के नाना प्रकार के जीवित और अजीवित अस्तित्वों के साथ अपने आपको विविध उच्च भावों के द्वारा बंधा हुआ पाता हूं। यदि मैं देखता हूं, कि किसी जीवित अस्तित्व वा अजीवित पदार्थ को कोई अनुचित हानि पहुंच रही है, तो मैं उस अस्तित्व वा पदार्थ के साथ जुड़ा हुआ अनुभव करने के कारण उसकी इस हानि से अपने हृदय में आघात लाभ करता हूं। यदि मेरी पत्नी वा मेरा कोई बच्चा वा अन्य पारिवारिक जन वा मेरा कोई सेवक वा श्रद्धालु, वा कोई और जन, किसी अन्य जन वा पशु वा पौधे वा किसी निर्जीव पदार्थ के संबंध में कोई अनुचित क्रिया करे, तो उसके देखने वा पता लगने पर मुझ तक उसकी क्रिया का आघात पहुंचता है, और मैं उससे क्लेश पाता हूं। यदि कोई अन्य जन वा जीव मेरे उपरोक्त नाना प्रकार के संबंधियों के संबंध में कोई अनुचित क्रिया करे, तो उसका भी मेरे हृदय पर आघात लगता है। यदि मैं अपने वा किसी और के घर की दीवारों, खिड़कियों, छतों, मोरियों, उसके फ़र्श, दरवाज़ों, परनालों और शीशों आदि को मैला, टूटा, बदसूरत, मकड़ी के जालों से भरा हुआ वा किसी रास्ते में गढ़े वा उसे धूलि से पूर्ण और गोबर वा लीद वा घास फूस आदि से मैला देखता हूं, तो मुझ पर उसका क्लेशदायक असर पड़ता है। यदि मैं अपने वा किसी और के कपड़ों, बर्तनों, लैम्पों, पुस्तकों, तस्वीरों, संदूकों, जूतों वा अपनी वा किसी और की किसी मेज़ चौकी आदि किसी अजीवित वस्तु को मैले और कदाकार रूप में देखता हूं, तो उससे मुझे क्लेश होता है। यदि मैं अपनी वा किसी की वस्तुओं को बे ठिकाने और विश्रृंखला की हालत में देखता हूं, तो उससे भी मुझे कष्ट होता है।

यदि मैं देखता हूं, कि किसी जीवित पौधे को (जिसे पानी मिलना चाहिए था) पानी नहीं मिला, और उससे वह सूख रहा है, तो मुझे उसकी इस हानि को देखकर तकलीफ़ होती है। यदि मैं देखता हूं, कि मेरा एक पारिवारिक जन दूसरे पारिवारिक जन के प्रति अथवा कोई सेवक किसी अन्य सेवक के प्रति उचित सम्मान प्रदर्शन नहीं करता, वा उसके किसी दुख दर्द की ओर ध्यान नहीं देता, अथवा उसके प्रति कोई और उचित वा न्याय मूलक व्यवहार नहीं करता, तो उसका आघात मुझ तक पहुंचता है, और मैं दुखी होता हूं। यदि मैं देखता हूं, कि मेरे अथवा मेरे किसी पारिवारिक वा सामाजिक जन के संबंध में कोई अपनी उचित प्रतिज्ञा भंग करता है, तो मुझे उससे कष्ट पहुंचता है। यदि मैं देखता हूं, कि मेरे वा किसी अन्य के संबंध में कोई जन कृतघ्न बनता है, तो उससे मुझे बहुत दुख होता है। यदि मैं देखता हूं, कि कोई जन किसी अन्य जन वा पशु को कोई अनुचित दुख वा किसी पौधे वा वृक्ष को अनुचित हानि पहुंचाता है, तो उससे मेरे दिल में सख़्त चोट लगती है। यदि मैं देखता हूं कि कोई जन मेरे वा किसी अन्य के संबंध में अपना कोई आवश्यक कर्त्तव्य कर्म ठीक समय में और भलीभांत पूरा नहीं करता, तो मुझे उससे बहुत क्लेश मिलता है। यदि मैं देखता हूं, कि कोई जन मेरे वा किसी अन्य जन के प्रति कोई अत्याचार करता है, तो मुझे उससे बहुत दुख होता है। यदि मैं देखता हूं, कि मेरा कोई संबंधी योग्यता रखने पर भी एक वा दूसरे कारण से अपने जीवन को उन्नत नहीं करता वा नहीं करना चाहता, तब मुझे उससे क्लेश पहुंचता है। यदि मैं देखता हूं कि कोई जन अपने आत्मिक

जीवन वा किसी और के विषय में किसी प्रकार का मिथ्या विश्वास रखता है, वा किसी मिथ्या मत वा विश्वास का प्रचार करता है, वा मिथ्या का साथी बन कर किसी संबंध में कपटाचारी वा हानिकारक बनता है, तो उससे मुझे बहुत आघात पहुंचता है। यदि मैं देखता हूं, कि किसी के संबंध में कोई द्वेष भाव रखकर उसे कोई अनुचित हानि पहुंचाने की चेष्टा करता है, तो उससे मैं व्यथित होता हूं। यदि मैं देखता हूं, कि कोई अपने धन का अपव्यय वा किसी वस्तु का अनुचित व्यवहार करता है, तो उससे मुझे तकलीफ़ पहुंचती है। यदि मैं देखता हूं, कि असंयम द्वारा कोई जन अपने शारीरिक स्वास्थ्य को हानि पहुंचा रहा है, तो मुझे उसकी ऐसी क्रिया क्लेश दायक मालूम होती है। इत्यादि, इत्यादि।

इस प्रकार के नाना आघात मुझे अपने किसी आश्रित वा अधीन अस्तित्व की रक्षा और सहाय करने और हानिकारक जन पर उसकी बुरी क्रिया के प्रगट करने वा यथा संभव उस तक अपनी देव ज्योति के पहुंचाने और उसमें किसी आवश्यक उच्च बोध के उत्पन्न करने के लिए सदा प्रेरणा करते हैं। जिन आत्माओं में इस प्रकार के नाना उच्च बोध वर्तमान नहीं हैं, उन्हें उपरोक्त प्रकार के न कोई आघात पहुंचते हैं, और न वह ऐसे किसी आघात से परिचालित होकर इन विषयों में किसी की कोई रक्षा वा सहाय करते हैं, और न किसी का ऐसी अवस्था से उद्धार करने के लिए कोई यत्न करते हैं, और न ऐसा संग्राम करके विश्व में कोई उच्च परिवर्तन उत्पन्न करते हैं।

इस प्रकार से विश्व के विविध विभागों में नाना प्रकार के हित लाने के निमित्त, मैं अधिकारी आत्माओं में उच्च वा सात्विक भावों के जाग्रत वा उन्नत करने के लिए जो जो कुछ संग्राम करता हूं, उसका भी उन बोधों से विहीन करोड़ों जनों में कोई निशान नहीं मिलता। इस लिए विश्व में इस प्रकार के सर्वोच्च परिवर्तन के लाने में जैसे मेरे आविर्भाव की विशेषता है, वैसे ही मेरे लिए अपने इस विशेष आविर्भाव के विशेष लक्ष्य वा व्रत के पूरा करने के निमित्त अपने विविध संबंधियों से उनकी नाना प्रकार की नीच गतियों के कारण नाना प्रकार के आघात और ऐसे बड़े बड़े आघातों से घोर से घोर क्लेश और बड़े बड़े दारूण दुख पाना और सहना और नाना प्रकार के त्याग स्वीकार करना और उनके उद्धार और भले के लिए अपने शारीरिक, मानसिक और हार्दिक बल को खर्च करना और सब प्रकार का आत्म समर्पण करना भी लाज़मी रहा है।

प्यास के लगने से मनुष्य पानी पीता है, और पानी पीना उसके शरीर के रक्त को पतला और प्रवाहित रखने के लिए निहायत ज़रूरी है। अब यदि राम को बहुत प्यास लगी हो, परन्तु उसे पानी न मिले, अथवा समय पर उसके मिलने की सम्भावना न हो, तो राम के लिए यह प्यास क्लेशदायक हो जाएगी। और यह प्यास उसमें जितनी अधिक प्रबल होगी, उतनी ही उसके लिए अधिक क्लेशदायक बनकर उसे व्याकुल और बेचैन करेगी। फलतः जिस मनुष्य में जो भाव जिस जिस प्रकार की तृप्ति ढूंढता हो, वह उसे लाभ न हो, तो वह उसके लिए अवश्य बेचैन और व्याकुल होता है।

मुझ में विश्व के प्रत्येक जगत के संबंध में वह सब देव भाव विकसित हुए हैं, कि जो उनमें उच्चगति मूलक एकता चाहते हैं। इसीलिए जिस किसी संबंध में जिस किसी कारण से कोई बुराई उत्पन्न होती है, अथवा कोई संभव और

वांछनीय भलाई नहीं आती, उससे मुझे आघात पहुंचता है, और यदि यह आघात बहुत प्रबल हो, तो मैं उससे बेचैन होकर तड़पने लगता हूं। परन्तु जिनमें ऐसे बोध विकसित नहीं हुए, वह ऐसी किसी घटना से दुखी वा बेचैन नहीं होते। उनमें जिस जिस संबंध में पाप वा बुराई का बोध नहीं है, उसके लिए उन्हें कोई आघात नहीं लगता, और कोई क्लेश वा दुख नहीं पहुंचता। इसीलिए कितने ही लोग क्या मेरे संबंध में और क्या विश्व के अन्य अस्तित्वों के संबंध में नाना प्रकार के पाप और नाना प्रकार की बुराइयां वा नीच गतियां ग्रहण करके केवल यही नहीं, कि कुछ दुखी नहीं होते, किन्तु बहुत शांत और प्रसन्न रहते हैं, पत्थर को जैसे जोंक नहीं लगती, वैसे ही इन अबोधी जनों को किसी संबंध में अपने किसी अनुचित आचरण के लिए कोई दुख वा क्लेश नहीं होता, और न कोई घृणा अनुभव होती हैं इसीलिए उनके ऐसे नाना पापों और अपराधों का क्रम बराबर जारी रहता है, और कोई कल्पित ईश्वर वा देवता वा उनका कोई मंत्र दाता गुरू उन्हें उनसे मोक्ष नहीं दे सकता।

जैसे भूख और प्यास का लगना शरीर की रक्षा के लिए आवश्यक है, और जिस जन को भूख वा प्यास न लगती हो, और आहार वा पानी के समय पर न मिलने अथवा बिलकुल न मिलने से उसे कोई बेचैनी न मालूम होती हो, उसके शरीर का नाश हो जाना अवश्यम्भावी है, वैसे ही एक ओर जिस आत्मा में अपने विश्वगत किसी संबंधी के संबंध में अपनी किसी नीच गति के लिए कोई क्लेश न होता हो, और उसके संबंध में किसी अशुभ वा अहित को उत्पन्न करके उसे कोई चोट न लगती हो, और दूसरी ओर उसे जीवन तत्व विषयक कोई ज्ञान और उसमें उच्च जीवन की प्राप्ति के लिए कोई आकांक्षा न हो, उसका नेचर के इसी अटल नियम के अनुसार कुछ काल में विनाश हो जाना अवश्यम्भावी है।" इस देव वाणी से हम भगवान देवात्मा के देव बोधों का कुछ न कुछ अनुमान लगा सकते हैं।

उद्भिद जगत के सम्बन्ध में

<u>एक गुलाब के पौधे की रक्षा का संग्राम</u>

एक कर्मचारी लिखते हैं :–

मेरे हित–स्वरूप भगवान्! पण्डित.... जी की गलती से गुलाब के जिस पेड़ को मिट्टी के तेल से हानि पहुंची है उसके बारे में कल शाम को मालूम होने पर उसकी हानि को आपने महससू किया और जहां तक सम्भव था आप उसकी हानि से रक्षा करने और उसे बचाने के लिए संग्राम मे लग गए। मिट्टी के तेल वाली मिट्टी को निकलवाने और खुद बीमार होकर भी खराब मिट्टी के उखाड़ने के काम में लग गए। खाना खाने का समय हो चुका था, भोजन करना भी भूल गए और यद्यपि आपको बहुत देर तक वहां बैठना पड़ा, परन्तु जब तक आप उसकी खराब मिट्टी निकलवाकर उसके ऊपर की जड़ों को एक व दूसरे तरीके से साफ कराके और नई मिट्टी और पानी डलवाकर, जो कुछ भी सम्भव था नहीं कर चुके, तब तक आप वहां से नहीं उठे। आपसे निवेदन भी किया गया कि खाना ठण्डा हो रहा है; अधिक समय परिश्रम करने से आपकी तकलीफ बढ़ जाएगी, परन्तु आपने इसकी परवाह नहीं की।

जिस तरह मां अपने बच्चे के बीमार हो जाने पर अपना सब आराम और अपनी बीमारी

को भूल जाती है और बच्चे को बचाने के लिए जो कुछ भी करना सम्भव हो, उसके करने में तत्पर हो जाती है, ठीक उसी तरह आपका एक पौधे के सम्बन्ध में भाव और उसको बचाने का यत्न देखकर आपके हित स्वरूप के सम्मुख मेरा हृदय झुक गया। इसके बाद कई बार इस दृश्य को सामने ला चुका हूं कि एक-एक साधारण पौधे के लिए भी आपके भीतर कैसे भाव हैं। उस समय जिस प्रकार आप बार-बार अपनी तकलीफ का प्रकाश करते थे कि आपने उस पेड़ के सुन्दर फूलों की रक्षा के लिए उसकी मोटी जड़ के चारों ओर मिट्टी के तेल वाली रूई रखने की आज्ञा दी थी, जिसकी दुर्गन्ध से चीटियां भाग जाएं और उसकी हानि न हो पाए; यदि आपको यह पता होता कि पण्डित... जी ने आपकी इस आज्ञा को ठीक तरह से नहीं समझा है तो आप अपने सामने वह रूई रखवाते। परम पूजनीय भगवान सोलन में तशरीफ रख रहे थे। दिन के समय उन्होंने देखा कि एक बहुत सुन्दर गुलाब के पौधे को कीड़े खाते हैं, दिन को दिखाई नहीं देते। परम पूजनीय भगवान देवात्मा जब देर शाम को बाहर तशरीफ लाए तो पता लगा कि फूलों को रात में कीड़े उसे नुकसान पहुंचाते हैं। कीड़ों को उड़ाया गया, लेकिन वह बार-बार उड़ाने पर भी उस पर फिर आ बैठते थे। भगवान ने यह देखकर और सोच कर फरमाया कि कीड़ों को उड़ा कर पौधे के इर्द-गिर्द कपड़ा लपेट दिया जावे। सर्वहित सम्पादक भगवान ने अपने पास से कपड़ा दिया और वह खड़े रहे जब तक कपड़ा उसके गिर्द न लपेटा गया और प्रत्येक रात को ऐसा होता रहा। वह गुलाब बहुत देर तक फूलों में सुशोभित रहा।

वाह! भगवान आश्रित जन रक्षक ही नहीं, बल्कि आश्रित पौधों और आश्रित निर्जीव वस्तुओं के भी परम रक्षक हैं। शोक कि वह पौधा अब पर्वत आश्रम में नहीं और उसके दर्शन से जो दिल के अन्दर एक अति हितकर तरंग पैदा होती थी, उसके पैदा होने का अवसर न रहा। तथापि भगवान की निराली छवि को दिखाने, उनके श्री चरणों में अपना शीश श्रद्धा पूर्वक झुकाने और उनके देव प्रभाव पाने के लिए इस पौधे की पवित्र याद कुछ कम जीवनदायक नहीं और भगवान की इस निराली जीवन घटना से मुझ तुच्छ (श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी) को अपने जीवन में लाभ उठाने का जो सौभाग्य प्राप्त रहा है और प्राप्त है, वह हमेशा कृतज्ञता के भाव से भरने और उनके दर का भिखारी रहकर उनके महान कार्य में अपनी तुच्छ शक्तियों को लगाकर सफल करने के लिए काफी है।

भगवान देवात्मा की रोशनी में उद्भिद जगत के सम्बन्ध में निम्नलिखित भजन की रचना हुई है। किस प्रकार पूजनीय भगवान इस जगत की सुन्दरता पर मोहित होते थे और इस जगत के उपकारों पर विस्तार से यह भजन रोशनी डालता है :-

"उद्भिद जगत के संग हमारा, है सम्बन्ध बहुत ही गाढ़ा,
जितना उच्च बोध हो उसका , उतना ही वह हितकर प्यारा।
शाक, अनाज, और फल देकर, हमें खाद्य पहुंचाता है;
रूई आदि के सूत्र को देकर, हमें वस्त्र पहनाता है।
सुन्दर पत्र और पुष्पों से, मन को मोहित करता है;
सुमिष्ट और इत्र सुगन्ध देकर, हमको हर्षित करता है।
रोग अवस्था में भी हमरा, यह शुभ साथी बनता है;
औषधि देकर रोग हमारा, कई बार हर लेता है।
छाया और काष्ठ आदि से, क्या कुछ मंगल करता है;
हित साधन की छवि मनोहर, हमारे सम्मुख धरता है।

उद्‌भिद यज्ञ बहुत है हितकर, जो जन साधन करते हैं;
वह ऐसे साधन से निश्चय, जीवन विकसित करते हैं।

एक माली का सम्मान प्रदर्शन

गयादीन माली

16 अप्रैल, 1928 ई. को भृत्य-स्वामी के सम्बन्ध में पाठ और विचार के साधनों का विशेष दिन है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा कई दिन पहले से ही अपने मुलाज़िमों को इस अवसर पर उपहार देने की आकांक्षा कर रहे हैं। उस खास दिन पर भगवान देवात्मा पहले बहुत वर्षों की न्याई जहाँ अपने धोबी, अपने नाई और अपने मेहतर को मिठाई और नकदी और मेहतर को दोनों वस्तुओं के भिन्न कुछ पहनने का कपड़ा भी उपहार में देते हैं, वहाँ समाज के एक मुलाज़िम को जो उनके बगीचे में प्राय: प्रतिदिन कुछ समय सेवा का काम करता है, उसके कई एक सद्‌गुणों के कारण अपने पवित्र निवास स्थान के एक कमरे में बुलाते हैं। उस समय एक निहायत आश्चर्यजनक और उच्च प्रभावप्रद पवित्र दृश्य पैदा होता है, अर्थात जब वह मुलाज़िम हित अनुरागी भगवान् देवात्मा के सामने आ खड़ा होता है, तब भगवान् देवात्मा स्वयं खड़े होकर अपने स्नेह भरे शब्दों से उसे इस प्रकार सम्बोधन करते हैं

"गयादीन! मेरे दिल में तुम्हारे लिए बहुत सम्मान का भाव है। मेरे दिल में तुम्हारी बहुत इज्ज़त है। और इसलिए मैं तुम्हें बहुत इज्ज़त की निगाह से देखता हूँ। और यह भाव तुम्हारी उन खूबियों के कारण है कि जो तुम अपने जिम्मे के कामों को दिली लगाव के साथ पूरा करने में प्रदर्शित करते हो। तुम्हें चाहे कोई देखे वा न देखे, परन्तु तुम पूरी ईमानदारी और पूरी मेहनत से अपना काम करते हो। मैंने बहुत बार तुम्हारी इस हालत का तुज़ुर्बा किया है और मैंने तुम्हें इन खूबियों में सदा ठीक पाया है, इसलिए मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। आज मेरी शिक्षा के अनुसार भृत्य-स्वामी के वार्षिक साधन का विशेष दिन है और आज इस दिन मैं तुम्हारे सम्बन्ध में अपने दिल के सम्मान भाव के प्रकाश में तुम्हारा अपने हाथ से चन्दन और फूलों के हार से अर्चन करना चाहता हूँ ओर फिर तुम्हें अपनी दिली क़दर-दानी के प्रकाश में अपनी तरफ से कई चीजें इनाम वा उपहार देना चाहता हूँ।

यह कहकर परम पूजनीय भगवान देवात्मा अपनी उंगलियों से चन्दन की तश्तरी में से कुछ चन्दन उठाकर उसके माथे पर लगाते हैं और फिर फूलों का एक हार उसके गले में पहनाते हैं और उसके बाद कुछ कपड़ा, कुछ मिठाई और रुपये नकद उसे उपहार देते है। अहा! उस समय का दृश्य निहायत ही सुन्दर, अति पवित्र और उच्च प्रभावदायक होने के भिन्न भगवान देवात्मा की विचित्र देव लीला को प्रकट करने और अधिकारी दिलों को भगवान देवात्मा के पवित्र श्री चरणों में बार-बार झुकाने वाला था। ओह! मनुष्य जगत् के शिरोमणि भगवान् देवात्मा एक साधारण मुलाज़िम की खूबियों के लिए किस कदर गहरा सम्मान भाव रखते हैं, और मनुष्य के हर सम्बन्ध में अपने अदभुत जीवन से किस कदर उच्च दृष्टांत प्रदर्शित करते हैं। काश! कि अधिकारी जन अधिक-से-अधिक संख्या में भगवान देवात्मा की और उनकी सम्बन्ध तत्व की अद्वितीय शिक्षा की अद्वितीय महिमा को उपलब्ध करने के योग्य हो सकें और उनकी शरण ग्रहण करके अपना अधिक-से-अधिक कल्याण साधन कर सकें।

पशु जगत के सम्बन्ध में

एक सेवक लिखते हैं -

मैं इन दिनों भगवान् देवात्मा के अद्वितीय देव जीवन की देवलीला को देखकर चकित हो रहा हूं। मेरे भगवान् अपनी लम्बी बीमारी की सख्त शारीरिक तकलीफों के लगातार चले चलने से बहुत निढाल हो चुके है, दिन के अतिरिक्त रात को भी अक्सर उन्हें बहुत तकलीफ और बेचैनी में से गुजरना पड़ता है। पिछले दिनों विशेषकर वह बहुत तकलीफ में से गुजरते रहे हैं। उन्हें काम के लिए न ही हुक़म दिया जाता है न ही प्रार्थना की जाती है। हां, उल्टा यह बिनती की जाती है कि आप आराम फरमाएं। परन्तु इस सबके बावजूद भी वह अपने जीवन व्रत सम्बन्धी कार्यो में अपने बहुत दुर्बल शरीर को घसीटकर लगा रहे हैं। प्रतिदिन की आवश्यक डाक का संक्षिप्त सारांश बराबर पढ़ते हैं और उसके सम्बन्ध में आवश्यक हिदायत देते हैं। लाहौर से मन्त्री देवसमाज की ओर से समाज के काम और हालात आदि की जो रिपोर्ट प्रतिदिन आती है, उसे देखते हैं और क्या उसके सम्बन्ध में और क्या देवसमाज के विविध विभागों के और नाना विषयों के सम्बन्ध में सोच-विचार करते हैं, और विविध हिदायतें देते और लिखवाते हैं। और फिर जब उनका शरीर दिमागी काम के योग्य नहीं रहता तब वह अपने अत्यन्त प्रबल पर-हित अनुरागों के कारण, सख्त शारीरिक तकलीफ़ों के बावजूद और नाना सम्बन्धों में हित लाने के लिए विविध प्रकार के काम करने या कराने लग जाते हैं। कभी किसी कमरे की चीज़ों को तरतीब की अवस्था में रखवाते हैं; कभी उसे किसी उच्च प्रभावदायक छवि आदि से सजाते हैं; कभी हम लोगों के दफ्तर में आकर उसकी कितनी ही बेतरतीब चीज़ों से आघात खाकर उनकी सही तरतीब लगवाने या उसकी सफाई के सम्बन्ध में हिदायत देने लग जाते हैं, कभी आंगन में कुर्सी पर बैठकर पौधों की कतर-छांट और उनकी क्यारियों को ठीक करने का काम कराने लग जाते हैं; कभी आंगन को ठीक करने लग जाते हैं। कभी अपने आश्रित पशुओं की बेहतरी का यत्न करने लग जाते हैं। अपने एक आश्रित कुत्ते के बीमार हो जाने पर अपनी सख्त तकलीफ को भूलकर उसे आराम पहुंचाने की फिक्र में लग जाते हैं, उसके लिए दवाइयां मंगाकर दे रहे हैं, कभी उसके आहार में परिवर्तन के आदेश दे रहे है, कभी स्वयं अपनी निगरानी में उसके लिए गद्दी सिलवाई, कभी उसके लिए चारपाई का प्रबन्ध करा रहे हैं। कभी आंगन में उसके निढाल पड़े होने पर स्वयं बहुत कमज़ोर होकर भी और मुश्किल से चलकर उस तक पहुंच रहे हैं और उसके पास बैठकर उसे स्नेह से अपने पवित्र हाथों से थपक रहे हैं, ताकि इससे उस पर कुछ आरामदेह असर पड़ सकें और उसकी तकलीफ कम हो सके। और वह कुत्ता भी उनकी इस कृपा को विशेष रूप से महससू कर रहा है। कभी उसे सेहन में मिट्टी-रोड़ों पर लाचार पड़ा हुआ देखकर उसकी तकलीफ को अनुभव करके उसे वहां से उठवाकर चारपाई पर टाट बिछवाकर डलवा रहे हैं और कभी एक या दूसरा काम करने वाले अपने कुछ सेवकों को, क्या किसी काम के बारे में, और क्या उनके जीवन के बारे में अमूल्य उपदेश प्रदान कर रहे हैं इत्यादि-इत्यादि। 76 वर्ष की वृद्ध आयु में तथा बहुत दुर्बल और रोगी

शरीर के साथ भी उनकी कैसी अद्भुत देवजीवन की देव - लीला!

घोड़े के आराम वा सेहत का ख्याल

नवम्बर 1909 में गुरू महराज हरि किशन लाल जी की कोठी में ठहरे हुए थे। वह घोड़ा गाड़ी में तशरीफ लाए थे। कोठी पर पहुँचने पर भगवान को फिक्र हुआ कि कहीं घोड़े को रात के समय सर्दी न लगती हो। उस पर डालने के लिए जो कंबल दिया है, उसे कहीं घोड़े का चालक न इस्तेमाल करता हो और घोड़ा नंगा रहता हो और इससे वह बीमार हो जाए। खुद उसको चैक किया। अपने घोड़ी के स्थान की सफाई आदि का भी स्वयं फिक़र रखते थे। इस निर्दयी संसार में जहां कोई मनुष्यों के प्रति भी हमदर्दी नहीं रखते, वहां पूजनीय भगवान पशुओं की सुरक्षा और आराम के लिए पशुओं किस क़दर फिकरमंन्द! धन्य है हमारे सत्गुरू!!

इसी प्रकार पशु जगत के सम्बन्ध में परम पूजनीय भगवान के जीवन की घटनाएं हमें उनके अद्वितीय रूप के दर्शन करवाती हैं। उनके इन्हीं देव भावों से प्रभावित होकर पशु जगत के सम्बन्ध में एक अनोखे भजन की रचना हुई है।

पशु जगत से हम हैं आए
उसको अपना जानेंगे;
उसके संग सम्बन्ध अपना
निश्चय हम पहचानेंगे।
पशु जगत को लाके सम्मुख
मन में हम यह ठानेंगे
उस अपेक्षा नीच जीवन,
हम कभी नहीं धारेंगे।
पशु जगत में जो हैं सद्गुण
उनको भी हम जानेंगे;
करके दिन दिन ग्रहण उनको
उच्च होते जाएंगे।
अपने आश्रित जन्तुओं को
आत्म - वत् हम पालेंगे
और किसी को भी अकारण,
कलेश नहीं पहुँचाएंगे
जो हैं हितकारी पशु
हित उनका सम्मुख लाएंगे
करके हित हम उनका साधन;
धन्य बनते जाएंगे।

मनुष्य जगत के सम्बन्ध में

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने जो भौतिक जगत, उद्भिद जगत और पशु जगत में एक आदर्श जीवन जीया है, उसकी 1 - 2 घटनाएं उदाहरण के रूप में दी हैं। परन्तु मनुष्य मात्र के लिए उन्होंने अतुल्य दान दिया है, मानव जगत से मिथ्या और पाप मिटाने के लिए उन्होंने जो असह्य दुःख सहे हैं, उनका ठीक 2 अनुभव करना और लिखना मेरे जैसे तुच्छ वजूद के लिए मुमकिन नहीं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने मनुष्य मात्र के सम्बन्धों में, माता - पिता, भाई - बहन, पति - पत्नी, देश, जाति, नौकर - मालिक और मनुष्य मात्र के अन्य सम्बन्धों में जहां अपने आदर्श व्यवहार से उदाहरण प्रस्तुत किए हैं, वहां अपने शिष्यों को भी इन सम्बन्धों में सद्व्यवहार करने की अलौकिक शिक्षा दी है, जो आज तक किसी पीर, पैगम्बर, ईश्वर,

खुदा आदि ने नहीं दी।

हमारे धर्मों ने तो सम्बन्धों के त्याग को धर्म बताया है, परन्तु परम पूजनीय भगवान की शिक्षा के अनुसार सम्बन्धों को त्यागने में धर्म नहीं, बल्कि सम्बन्धों में उच्च वा हितकर व्यवहार करने में धर्म है। आपने सम्बन्धों में मेल वा एकता लाने के लिए भरसक प्रयत्न किया है। हर सम्बन्ध में कृतज्ञ बनने और नीच गतियों द्वारा उत्पन्न अन्मेल को मिटाने को धर्म बताया है। उनके प्रभावों ने कृतघ्न बच्चों, पति-पत्नियों, भाई-बहनों को कृतज्ञ बनाकर घरों में स्वर्ग पैदा किया है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने मनुष्य मात्र से सब प्रकार की घृणा, ईर्ष्या वा द्वेष को मिटाने का बीड़ा उठाया है। उन्होंने मनुष्यों से तरह-2 के दु:ख और सदमें खाकर भी उनका भला किया है। उदाहरण के तौर पर :-

<u>सख्त बीमारी में भी पर-हित करने के लिए विवश</u>

सन् 17 मार्च, 1924 की रात को श्री देवगुरू भगवान् की दाढ़ और शरीर में सख्त दर्द हो गया। उससे प्राय: सारी रात वह सो नहीं सके और इस दर्द से बहुत बेचैन रहे। प्रात: काल जब 5 बजे का घंटा बजा, तब वह अपने निज के साधन में प्रवृत्त हो गए। साधन के अनन्तर हर रोज की न्याई लिखने के काम में लग गए और जितनी देर तक पहले काम किया करते थे, प्राय: उतनी देर तक ही लिखते रहे। सवा आठ बजे के लगभग उनके लिए दूध लाया गया और उनके श्री चरणों में लिखाई को बंद करने और दूध पीने के लिए प्रार्थना की गई। दूध पी चुकने के अनन्तर स्वास्थ्य के विषय में पूछने पर मालूम हुआ कि उस समय दाढ़ में दर्द प्राय: नहीं है, परन्तु मसूड़े में वर्म हो गया है। और शरीर में दर्द यद्यपि रात की अपेक्षा कुछ कम है, परन्तु अभी पूर्ण रूप से नहीं गया। इस पर एक कर्मचारी ने कहा कि दिमाग़ी काम से कमजोरी के बढ़ने से आपको कई तकलीफ़ें हो जाती हैं। इस पर श्री देवगुरु भगवान् ने फ़रमाया कि हाँ, **यह तो ठीक है, परन्तु पर-हित के लिए काम करने के बिना हमारे जीने की कोई जरूरत भी मालूम नहीं होती।** जो कुछ लिखा जा चुका है उसको ठीक करने और कुछ नया लिखने का काम बहुत-सा पड़ा हुआ है उसके लिए और कई वर्ष चाहिए। जब तक शरीर साथ देगा तब तक हम यह और अन्य काम किए जाएँगे। **यदि किसी वजूद से कोई हितकर कार्य न निकले तो उसके जीने की क्या जरूरत है,** यदि कोई कव्वा जिससे पर-हित का कोई काम नहीं निकलता आज मर जाए तो दुनिया को क्या हर्ज़ है। कोई जीवित अस्तित्व वहाँ तक ही जीने का हक रखता है, जहाँ तक वह विश्व के विकास में सहायक बनता है।

ओह! जिस देवात्मा के मुख से यह शब्द निकले हों, वह कितने महान! जिस देवपुरूष के भीतर पर-हित विषयक इतना प्रबल भाव वर्तमान है वह कैसा अद्वितीय!! प्राय: सारी रात दर्द में कटी है, और उसके कारण कमजोरी भी हो गई है, तो भी प्रतिदिन के साधन और लिखने के काम में कमी नहीं आती। उनसे कहा जाता है कि आप केवल पर-हित के लिए इतने महा मूल्यवान लेख लिख चुके हैं, कि जो मनुष्य मात्र

के लिए काफ़ी से ज्यादा है। परन्तु वह हित अनुरागी भगवान् फरमाते हैं, **'जिस जीवित अस्तित्व से कोई हितकर कार्य न निकले उसके जीने की क्या ज़रूरत है**? कोई अस्तित्व वहीं तक ही जीने का हक रखता है जहाँ तक वह विश्व के विकासक्रम में सहायक होता है।'

सन 1920 ई. से अजीर्ण-रोग संबंधी बहुत बड़ी बीमारी के बाद अपने शरीर की रोगी दशा में भी एक ओर कई पुस्तकों की रचना करने और उनके भिन्न और नाना लेखों के लिखने और समाज-संबंधी अन्य जनों के विविध प्रकार के हितकर लेखों को दुरस्त करने के बहुत कठिन काम और दूसरी ओर समाज के परिचालन-विषयक नाना कामों के सम्बन्ध में कई प्रकार की जटिल और गहरी चिन्ताओं और अति परिश्रम और अपने कई परिवारिक, सामाजिक और अन्य लोगों के नाना प्रकार के अनुचित आचारों से बड़े-बड़े आघात पाने के कारण भगवान के शारीरिक स्वास्थ्य को यद्यपि बहुत हानि पहुँच चुकी थी, और उन्हें काम छोड़ देने के लिए डाक्टरों आदि की ओर से बार-बार प्रेरणा की जाती थी, तथापि वह अपने आत्मिक हित-विषयक महा प्रबल अनुराग के कारण किसी तरह भी अपने ऐसे काम छोड़ न सके। इसके भिन्न उन्होंने यह अनुभव करके कि लाखों मनुष्य जिस प्रकार के नीच अनुरागों के दासत्व में फँसकर दिनों-दिन अपने आत्माओं का घात कर रहे है, और अपने आत्मिक अन्धकार के कारण अपनी ऐसी दशा को न देख सकते हैं और न ही अपनी हार्दिक अबोधता के कारण उसके सम्बन्ध में कोई दिक्कत व कष्ट अनुभव करते हैं, उनके विषय में शिक्षा देने की नितान्त आवश्यकता है, लाहौर में इतवार की साप्ताहिक सभाओं में कई उपदेश दिए। जून मास के दूसरे सप्ताह में वह सोलन पहुँचे। वहाँ एक दिन घोड़ा गाड़ी के उलट जाने से उन्हें जो चोटें आई उनसे उसकी सेहत और भी खराब हो गई। अगस्त मास में फिर भगवान् लाहौर पहुँच गए। सोलन में विज्ञानमूलक धर्म शिक्षा विषयक पुस्तक का बहुत सा भाग लिखा था। लाहौर पहुँचकर उन्होंने एक अंग्रेजी पुस्तक की रचना भी आरम्भ कर दी। कई दिन लगातार सभाएँ कराई। इस सारे घोर परिश्रम से उनकी सेहत को और भी बहुत आघात पहुँचा। उनका स्वास्थ्य बिल्कुल चकनाचूर हो गया और एक पूर्णत: नए और अत्यन्त कष्टदायक रोग की भी उत्पति हो गई। महोत्सव निकट आ पहुँचा था और भगवान् उससे पहले-पहले एक पुस्तक छपवाकर निकाल देने की अत्यन्त गहरी इच्छा रखते थे। वह बार-बार इस इच्छा का प्रकाश करते थे कि **चाहे उनके शरीर की मृत्यु ही क्यों न हो जाए, उन्होंने अपनी जिस पुस्तक को महोत्सव तक छपवा देने का संकल्प कर लिया है** उसे वह किसी तरह छोड़ना नहीं चाहते। इसीलिए इस विषय में उन्होंने किसी डाक्टर या किसी अन्य जन की कोई बात न मानी और वह रात को भी लैम्प जलाकर लेटे-लेटे व बैठकर लिखने या प्रूफ देखने का काम करते रहते थे। उनका शुभ संकल्प पूरा हुआ और वह पुस्तक महोत्सव तक छप गई। परन्तु उनके शरीर को जितनी हानि पहुँची उसका अनुमान नहीं हो सकता।

सच्चाई और भलाई के लिए प्रभावशाली ब्यान

एक बार अंजूमन की रईसों वा पदाधारियों द्वारा एक सोसाईटी बनाई गई थी, भगवान देवात्मा को उसका मैंबर चुना गया। उसमें एक शख़्स द्वारा सच्चाई के विरूद्ध व्यवहार देखकर पूजनीय भगवान को बहुत दु:ख पहुँचा। राबर्ट नाट जो "फ्रैंड ऑफ इण्डिया और स्टेट्समैन" 2 अंग्रेजी अख़बारों के एडीटर थे, उन्होंने उस उच्च पदधारी की खूब कलई खोली इसलिए कई जन उनके विरोधी हो गए। इसी अंजूमन के मकान में एक ओर बड़ा जलसा था। राबर्ट नाट पहले कलकत्ते के विख्यात अंग्रेजी अखबार "फ्रेन्ड आफ़ इण्डिया" के मालिक और एडीटर थे। पीछे से इंग्लैंड जाकर वह 'स्टेट्स्मैन' के एडीटर थे। वह भारतवासियों के साथ बहुत गहरी सहानुभूति रखते थे। उपरोक्त उस शख़्स के सम्बन्ध में गर्वनमेन्ट की सब प्रकार की अनुचित क्रियाओं की बहुत जोश के साथ कलई खोलते थे। ऐसी अवस्था में काफी बूढ़े लोग उन के मुखालिफ़ बन गए थे, पर वह बेपरवाह थे। भलाई के रास्ते को कटंकमय देखकर भी वह उस पर पांव धरने से नहीं रुकते थे। क्यों रुकते? यदि बुरे लोग बुरे रहकर हज़ार मुसीबतों के आने पर भी बुराई का रास्ता नहीं छोड़ते, तो भले लोग किसी भलाई के अनुरागी होकर किसी दुख वा मुसीबत के आने पर उसे क्यों छोड़ दें? राबर्ट नाट इस पहलू में बहुत वफादार शख्स थे। परन्तु जैसा कि अक्सर होता है, वह इस राह पर चलते हुए एक बार बहुत बड़ी विपद् में फंस गए। उनकी इस मुसीबत का पता मिलने पर उनके हमदर्दों ने उन की सहायता के लिए हाथ पांव मारने शुरू किए। कई स्थानों से उनकी मदद के लिए रुपया इकट्ठा होने लगा। लाहौर में भी पूर्व्वोक्त जलसा इसी अभिप्राय के लिए किया गया। परन्तु जलसा बहुत ठण्डा था। कई लोगों ने कई तक़रीरे कीं, मगर उन में दिल की कोई शक्ति न थी। खुश्क शब्द निकले और हवा में उड़ गए; किसी के दिल को छू न सके। हृदय कठोर से कठोर और सूखे के सूखे पड़े रहे। सभा में लोग बहुत थे, परन्तु उनके दिल सूने थे। ऐसी अवस्था में सभा के उद्देश्य की सफलता दिखाई नहीं देती थी। इसी निराशा के समय आख़िरकार श्री देवगुरु भगवान् उठे। उनका शुभ - अनुरागी हृदय स्वदेश के हित से उछल रहा था। उनके देश के हित के लिए जिस जन ने इतना परिश्रम किया था, उसकी विपद् का हाल उनके दयावान हृदय को खूब जोर से हिला रहा था। वह राबर्ट नाट के लिए सच्ची और गहरी सहानुभूति से भरे हुए थे। बस, खड़े होने की देर थी, कि उनके उच्च हृदय के उच्च भावों की उच्च शक्ति का प्रवाह बहने लगा। थोड़ी सी देर में उपस्थित जनों के दिल नरम होकर पारे की तरह हिलने लगे। अपील शुरू हुई। लोगों ने अपनी 2 जगह से उठ कर और मेज़ के पास पहुंचकर रुपया रखना शुरू कर दिया। मेंह (वर्षा) की तरह चारों ओर से रुपया बरसने लगा। थोड़ी सी देर में धन का एक बहुत बड़ा ढेर लग गया। सारी नाउम्मेदी चली गई। राबर्ट नाट की मदद के लिए एक बहुत माकूल रक़म चन्दे की इकट्ठी हो गई।

अपने शिष्य के प्रति कृतज्ञता एक अलौकिक दृश्य

9 अक्तूबर : की प्रात: काल के समय जब देव

समाज के कितने ही कर्मचारी, सहायकारी और अन्य सेवक कि जिन में मोगे के श्रीमान सरदार जमीयत सिंह जी भी शामिल थे, श्री देवगुरू भगवान के दर्शनों के लिए उनके वास स्थान में पहुंचे, तब उनके प्रणाम कर चुकने और बैठ जाने पर श्री देवगुरु भगवान श्रीमान सरदार जमीयत सिंह जी को संबोधन करके और उनके साथ अपने बहुत लम्बे काल के संबंध का ज़िकर कर रहे थे। कैसी अनोखी कृतज्ञता से जब अपने कुछ उच्च भावों का प्रकाश किया तब उनके प्रभावों से उस समय जो दृश्य पैदा हुआ वह पूर्णत: अलौकिक था। भगवान ने उस समय श्रीमान जमीयत सिंह जी के आत्मा में सच्ची दीनता और अपने सम्बंध में उनकी वफादारी का वर्णन करके भरे दिल से फरमाया कि अमुक अयोग्य और महा कृतघ्न आत्मा (पंडित देव रतन) की 24 साल तक विविध प्रकार की भलाई और सेवा में मैंने जिस क़दर बेहद मेहनत की और उससे जितने और जिस - जिस प्रकार के घोर से घोर अज़ाब और दारुण दु:ख पाए और सहे कि जिस - जिस प्रकार के किसी और से नहीं पाए और नहीं सहे और जो अब सब कुछ निष्फल से भी बुरा साबित हो रहा है, वैसा परिश्रम और वैसी सेवा करने का मौका यदि मैंने आप जैसे अच्छी प्रकृति रखने वाले आत्मा के सम्बंध में पाया होता तो....। उनके मुख से अभी तक यह दर्दनाक और दु:ख से भरे हुए शब्द निकले थे कि उनके सुनने के साथ ही श्रीमान जमीयत सिंह जी का हृदय फूट पड़ा और वह बड़े ज़ोर से चिल्ला कर रोने लगे। भगवान ने उसी समय फिर कहा कि.... आप जैसे प्रकृति के आत्मा मुझे अधिक संख्या में प्राप्त होते और... मेरे समीप रहते होते। सरदार जी! आप उन विशेष व्यक्तियों में से हैं कि जिनको मैंने अपने जीवन की एक या दूसरी मुसीबत में हमेशा अपना समझा और अपना पाया। सन 1893 में जब मुझ पर... के द्वारा उत्पीड़न शुरू हुआ था और कई साल तक जारी रहा और जब आप मेरे सेवक भी नहीं बने थे तब भी उन दिनों की मुसीबतों में भी आपने जिस प्रकार मेरा साथ दिया उसे मैं कभी भूल नहीं सकता। भगवान के इस भाव को सुनकर सरदार जी और भी व्याकुल हो गए और उसी अवस्था में रोकर कहने लगे कि मेरे और मेरे परिवार के लिए आपने जो कुछ किया है उसका बदला मैं कभी नहीं दे सकता। कदाचित मेरे परिवार में ऐसा आत्मा होता कि जो कुछ मैं खुद इस वृद्ध अवस्था में नहीं कर सकता, उसे वह करके आपके वर्तमान दु:खों और संग्रामों के लिए सहायक बन सकता।

परम पूजनीय भगवान की वृद्ध अवस्था थी, बहुत सख़्त बीमारी के कारण जीवन और मृत्यु में युद्ध चल रहा था, जब थोड़ी सी होश आई तो उन्होंने फरमाया कि हम सरदार जमीयत सिंह जी को बहुत धन्यवाद देते हैं। जिस समय हम मुकद्दमों की मुसीबत में फंसे हुए थे और चारों ओर से विरोधताओं का धूआंदार तुफ़ान जारी था और उन दिनों हमारी सहायता के लिए कोई तैयार नहीं था, हां एक 2 उपकृत जन भी हमारे पक्ष में सच्ची गवाही तक देने से इन्कार करता था, तब उन दिनों सरदार जी ने हमारी बहुत सहायता की थी। इस समय उनकी वह सेवाएं सन्मुख लाकर हमारा हृदय उनके लिए कृतज्ञता के भाव से भर रहा है, और यह कशमकश रही है कि अपने इन भावों को उन तक पहुँचाने से पहले ही हमारी मृत्यु न हो जाए। तुम हमारी ओर से उन तक हमारे धन्यवाद और हमारी कद़रदानी

के भाव अवश्य पहुँचा देना।

वहाँ उपस्थित जनों के हृदय गुरू महाराज के चरणो में बेअख़्त्यार झुक रहे थे, कि ऐसे निराले गुरू, जो अपने शिष्य के उपकार को बार बार अनुभव करते हैं, जिस शिष्य और उसके परिवार का महा हित साधन किया है। धन्य हैं अद्वितीय देवात्मा!

सख्त तकलीफ की अवस्था में पूजनीय भगवान देवशास्त्र की रचना में प्रवृत हो जाते हैं। उनके भीतर इस बात के लिए बहुत बेचैनी रहती है कि उन्होंने पिछले वर्ष पूजनीय देवशास्त्र के जो कई लेख लिखे थे वह अधूरे पड़े हैं और वह अपने शरीर के अस्वस्थ हो जाने के कारण उन्हें पूरा नहीं कर सके और देवशास्त्र के किसी लेख को भी अब तक प्रैस में नहीं दे सके। उनके जीवन का यह अत्यन्त आवश्यक और हितकर काम अब तक खटाई में ही पड़ा हुआ है। पिछले चार महीने वह इसी दु:ख की अवस्था में गुज़ार चुके है। शरीर की तकलीफ चले चलने और उल्टा बढ़ जाने से उनकी यह हार्दिक बेचैनी और दु:ख और भी बढ़ जाते हैं और वह उसके लिए और प्रतीक्षा सहन नहीं कर सकते और नतीजे की कुछ परवाह न करके 2 मई, सन् 1926 को पूजनीय देवशास्त्र के लेखों को ठीक करने के अति हितकर और निहायत मूल्यवान काम में लग जाते हैं और उस रोज प्राय: पौने दो घण्टे इसी काम में लगे रहे हैं, जिसके फलस्वरूप उनके दिमाग पर बहुत ज्यादा दबाव पड़ने से स्नायु दुर्बलता बहुत बढ़ जाती है। वह बहुत निढाल हो जाते हैं और उनके पुराने रोगों का फिर जोरदार हमला हो जाता है। अर्थात् उनके पेट में वायु के बहुत अधिक पैदा हो जाने और उसके कारण लगातार निहायत जोरदार खांसी और डकारों के बढ़ जाने से उन्हें बहुत कष्ट से गुजरना पड़ता हैं, परन्तु इस अवस्था में पहुंचकर भी हित-स्वरूप भगवान् अपने इस विशेष काम को बन्द नहीं करते। जब उनकी सेवा में बार-बार प्रार्थना की जाती है कि इस तरह से उनका शरीर कब तक कायम रहेगा, तब वह फरमाते हैं "ऐसी सख्त बीमारी और मुसीबत की हालत में भी मुझे अपने इस निराले और परम हितकर काम में जुटे रहकर मरना बहुत भला मालूम होता है।"

शुभ संग्राम

गंगानगर, 08.11.2023

श्रीमान दिवान जी की इच्छा के अनुसार उनके नये घर में 2 सभाएँ रखी गई। पहली सभा 8.11.2023 को रात्रि 8.00 बजे रखी गई, पहले श्रीमति वन्दना बहन जी ने महिमा विषयक भजन का गान किया वा बाद में मोनू जी ने भी एक प्रार्थना विषयक भजन का गान किया। इसके उपरान्त सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने हाजरीन को सम्बोधित किया कि धर्म क्या होता है? इसमें उन्होंने बताया कि धर्म अच्छे व्यवहारों से आता है यदि हमारे सम्बन्धों में हमारे व्यवहार अच्छे नहीं है, तो कहलाने वाला कोई भी धर्ममत अथवा पूजा-पाठ करके भी हम धर्मवान नहीं बन सकते।

यहाँ पर दिवान जी के घर का छोटा-सा सुन्दर आँगन पूरा भर गया, करीब 30 जनों की हाजरी थी, इसमें बहुत सारे नये जन स्त्री-पुरूष थे। अपने नये मकान में हाजरीन के प्रवेश की खुशी में उन्होंने खीर खिलाई।

<u>सभा, 9.11.2023 , सुबह 8.00 बजे।</u>

सबसे पहले गोपाल जी ने 2 भजनों का गान किया। बाद में सभापति जी ने अपना ब्यान आरम्भ किया और बताया कि उच्च व्यवहार उच्च व नेक भावों से होता है, उच्च गुणों से होता है, उच्च गुणों के बगैर उच्च व्यवहार निकल ही नहीं सकता। इसके बाद उन्होंने ईमानदारी, पवित्रता, कृतज्ञता व हानि परिशोध आदि गुणों का संक्षिप्त वर्णन किया। इस सभा में करीब 10 जनों की संख्या थी। सभा के बाद खुशी-खुशी फल बांटे गए।

सभा के बाद श्रीमान सुरेन्द्र भाटिया जी के घर एक जन से मुलाकात की और हितकर बातचीत हुई।

<u>पदमपुर में शुभ संग्राम</u> शाम के करीब 4.00 बजे श्रीमान जी गोपाल जी के साथ पदमपुर पहुंचे, उनके साथ गंगानगर से एक और नए जन भी साथ पहुंचे। गजसिंहपुर से भी 2 सेवक सभा के लिए पधारे। यहाँ रात्री की सभा का समय 7.15 बजे रखा गया।

श्रीमान मुकेश जी ने व श्रीमान सुभाष सेतिया जी ने गुरू महिमा के भजनों का गान किया। गुरू महिमा के गान के उपरान्त सभापति जी ने ब्यान किया कि गुरू महाराज की बनाई हुई देव-समाज में सेवकों के लिए पापों के सम्बन्ध में आठ प्रतिज्ञाएँ रखी हैं, उनका संक्षिप्त विवरण किया गया व उसके बाद इन दुराचारों को छोड़ देने के बाद जो जीवन में सुन्दर व हितकर परिवर्तन आता है उसके सुन्दर दृष्यों को ब्यान किया गया। इस विषय को कई सुन्दर उदाहरण देकर स्पष्ट किया गया।

(2) <u>सभा, 10.11.2023 , सुबह 9.30 बजे।</u>

2-3 जनों ने बहुत सुन्दर आवाजों में गुरू महिमा के भजन गाए।

सभापति जी ने गुरू महिमा के भजन गाने के सम्बन्ध में ब्यान फरमाया कि अलग-2 सब धर्मों ने गुरू के सम्बन्ध में महिमा के गीत गाए हैं। यह विषय बहुत ऊँचा है। गुरू यदि सच्चे हों तो उनसे जुड़ना महासौभाग्य है। सच्चे गुरू के साथ जुड़ने से सच्चे परिणाम आते हैं।

भारत वर्ष की पुरानी फिलास्फी के अनुसार सब सम्बन्ध, मिथ्या वा माया हैं, यह कथन सत्य नहीं है। देवात्मा सतगुरू की शिक्षा के अनुसार सम्बन्धों में व्यवहारों से धर्म कैसे आता है, उसके विषय में बताया। हमारा जीवन अनेकों वजूदों की सहायता-कृपा का फल है अत: पाए हुए उपकारों के बदले में प्रति उपकार करने से धर्म आता है। पति-पत्नी के आपसी सम्बन्ध में सन्मान का व्यवहार होना चाहिए, सेवाकारी व्यवहार होना चाहिए, एक दूसरे के प्रति उच्च भावों से परिपूर्ण व्यवहार से धर्म आता है।

सभापति जी ने कर्तव्य-बोध का सुन्दर ढंग से बयान किया कि हम सब कहीं न कहीं वर्कर हैं और हम उसके बदले में मेहनताना भी लेते हैं अत: हममें से हर एक को यह महसूस करना चाहिए कि मैं उस मेहनताने के अनुसार काम करता हूँ कि नहीं, यदि नहीं करते तो धर्म नहीं हैं। बाद में "जीवन के दाता तुम्हें मैं ध्याऊँ" भजन का गान श्रीमान गुरचरण सिंह जी ने किया।

हम सब सुख अनुरागी हैं। गुरू महाराज ने फरमाया है कि सब नीच सुख अनुराग और सब नीच घृणाएँ मनुष्यों के लिए ज़हरे कातिल हैं और तुम्हारी दुश्मन हैं, मेरी ज्योति को पाओ और

इनसे मुक्ति पाओ।"

सभापति जी ने नीच सुख अनुरागों की गुलामी के बारे में बताया। एक 250 - 300 एकड़ के मालिक को शराब की लत ने मार दिया। मिर्जा गालिब एक बड़ी हस्ती को भी शराब ने खा लिया। शिव कुमार बटालवी भी बड़े शायर थे उन्हें भी उनकी अदना कमजोरियों ने खा लिया। एक डाक्टर को उसकी बढ़ी हुई काम वासना की गुलामी के बारे में जिस दिन अग़ाह किया था वह उसी दिन कुछ देर के बाद ही अपनी गलत करतूत के कारण पकड़ा गया व उसकी पिटाई हुई। हम अपने उपकारियों को भी याद करें और उनके उपकारों को भी याद करें। सभापति जी ने अपने उपकारी माननीय श्रीमान गुरवन्त सिंह जी और श्रीमान बलदेव सिंह जी के उपकारों को याद किया।"

गुरू के असर बहुत ही बारीकी में ईमानदारी पैदा करते हैं।

सभापति जी ने बहुत दीनता से हाजरीन में गुरू की सँगत के आगे अपने सम्मान भाव को प्रकट किया और बताया कि हमारे धर्म सम्बन्धी साधारण इन्सान नहीं हैं। उनके साथ हमारा सम्बन्ध सम्मान वा सेवा का होना चाहिए।

भजन : श्रीमान गुरचरण सिंह जी :- "जय जय देव गुरू भगवान तुम्हारी महिमा अति महान" गुरू महाराज ने फरमाया है - तुम्हारे जीवन का लक्ष्य उच्च भावों को पैदा करना और विकसित करना है और नीच भावों से मोक्ष पाना है। नीच घृणा ज़हरे - कातिल है चाहे, वह बोलने के स्तर पर हो, चाहे सोचने के स्तर पर हो।

एक बाप ने अपने मासूम बच्चे के द्वारा रूपये तंदूर में जलाने पर बच्चे को ही तंदूर में डाल कर जला दिया। सवाल ये है कि इसी तरह की हमारी अनेक इच्छाएँ अधूरी रह जाती हैं या उनके विपरीत घटनाएँ होती हैं तो ऐसी अवस्था में हमारी प्रतिक्रिया कैसी और किस सीमा तक होनी चाहिए। यह हमारी हृदय की अवस्था वा हमारे बोधों पर निर्भर करता है।

जिन लोगों ने दूसरों को माफ किया है, उन्होंने कुछ अपने को जाना है। अपने ऊपर कन्ट्रोल किया है।

सभा के बीच में सेवकों की अपने माता पिता के प्रति उनकी सेवाओं का उदाहरण दिया।

(1) सुखदेव जी, गोनियाना द्वारा अपनी पिता की सेवा करने का हाल बताया।

(2) बलजीत जी, कल्याण का अपने माता और पिता की ख़ास सेवा का भी ब्यान किया।

हमारी कोई इच्छा या बात पूरी न होने पर जो प्रतिक्रिया होती है, उसे गुस्सा या नीच घृणा कहते हैं।

'खून अगर काम आता है तो जख्मियों को बचाने के लिए आए, किसी का खून घटाने के लिए नहीं' नीच घृणा/गुस्से में 'खून जलने लगता है, आत्मा जलने लगती है।

नीच घृणा/गुस्से का ईलाज क्या है? - माफ करना, दूसरे की सेवा, सहायता सहयोग करना, दुश्मनी को भूलकर उसके काम आना/प्यार करना है।

नीच घृणा सेवा से खत्म होती है। प्रेम से खत्म होती है।

आख़िरी सभा में कुल दान 2900/- एकत्रित हुआ। एक श्रद्धालु जन ने डा० मुंशा सिंह जी के गुणों से प्रभावित होकर उनके प्रति एक कविता का गान किया व उपकृत भाव से हाजरीन में फल बाँटकर खुशी प्राप्त की। श्रीमान डाक्टर साहब जी की तरफ से भी मिठाई बांटी गयी।

Published on 5th of the month
20

Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

महोत्सव का कार्यक्रम

सोमवार 25 दिसम्बर 2023

प्रवेश सभा – 5.00 बजे सायं

मंगलवार 26 दिसम्बर 2023

1– पहली सभा – 9.30 बजे प्रात:

विषय – परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बन्ध

2– पब्लिक लैक्चर– 4.00 बजे सायं

3– संगीत सभा – 7.30 बजे सायं

बुधवार 27 दिसम्बर 2023 (महोत्सव का विशेष दिन)

सूर्य निकलने के समय जो कि आत्मिक जगत के सूर्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा के शुभ जन्म का समय है, बैंड, बाजा, कीर्तन, शुभकामनाएं और जय ध्वनि – 6.30 बजे प्रात:

1– पहली सभा – 9.00 बजे प्रात:

विषय – भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बन्ध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता । धन और जन की अपील ।

2– दूसरी सभा – 2.30 बजे दोपहर – बच्चों की सभा और भजन प्रतियोगिता

3– पब्लिक लैक्चर – 4.00 बजे सायं

4– दीप माला – 6.00 बजे सायं

5– आलोचना सम्बन्धी सुझाव (लिखकर भी दे सकते हैं)

वीरवार, 28 दिसम्बर 2023

1– पहली सभा – 9.00 बजे प्रात: सेवक, सेविकाओं का ग्रहण, श्रेणियों में उन्नति तथा पारिवारिक अनुष्ठान

2– भाव प्रकाश

3– देव आरती का गान और जय ध्वनि

नोट :–

1. कृपया सेवक–सेविका अपनी एकाकारियों के साथ शामिल हों ।
2. आवश्यकता पड़ने पर किसी कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है ।
3. यात्रीगण कृपया अपने बिस्तरे न लाएं, केवल एक चादर लाएं, बाकी बिस्तरे आश्रम से मिल जाएंगे।
4. अपने आने की पहले संख्या समेत सूचना देने की कृपा करें।

सभाओं के विषय निमन्त्रण पत्र में दिए जाएंगे।
फोन : 99288–30802, 82838–55959, 81465–53154

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री–Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts